4. आगम एक परिचय

(क) एकादश अंगसूत्र

1. आचारांगसूत्र

तीर्थंकरों की दिव्यध्वनि का सर्वप्रथम मूल रूप यदि कहीं उपलब्ध होता है, तो वह है–आचारांगसूत्र। द्वादशांगी में आचारांगसूत्र का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसलिए इसे अंगों का सार कहा गया है। अङ्गानं सारो आयारो। आचारांग सूत्र में आचार विषयक उपदेश दिया गया है। विशेषतया मुनि के आचरण पर यहां गहन चिन्तन मिलता है। आचारांग सूत्र का प्रतिपाद्य विषय बहुत विस्तृत है। इसमें षड्जीवनिकाय की यातना, शीत-उष्ण आदि परिषहों पर विजय, संसार से उद्विग्नता, स्त्री संसर्ग-परित्याग, धर्म ध्यान के लिए निर्जन स्थान, वस्त्रैषणा, पात्रैषणा और महाव्रतों की दृढ़ता का वर्णन किया गया है। इसके अतिरिक्त भगवान् महावीर स्वमी के जीवन विषयक विशेष तथ्य इस सूत्र में बड़ी गरिमा के साथ संजोए गए हैं।

भाषा-शैली की दृष्टि से भी यह सूत्र बड़ा महत्त्वपूर्ण है। जैनागमों में यह स्पष्ट उल्लेख मिलता है कि तीर्थंकर जनभाषा अर्द्धमागधी प्राकृत में अपना सद्धर्मोपदेश करते हैं। इस कारण आचारांग सूत्र की भाषा अर्द्धमागधी प्राकृत भी अत्यन्त प्राचीन है। कहीं-कहीं यहाँ रूपक, दृष्टान्त एवं कथा संवाद का प्रचुर रूप में प्रयोग दृष्टिगोचर होता है।

2. सूत्रकृतांगसूत्र

यह ग्रंथ भी बड़ा उपादेय है जिसमें दो श्रुतस्कन्ध है। पहले में 16, दूसरे में 7 अध्याय हैं। जैन परम्परा द्वारा मान्य अंग सूत्रों में सूत्रकृतांग का द्वितीय स्थान है, किन्तु दार्शनिक साहित्य के इतिहास की दृष्टि से इसकी महत्ता आचारांगसूत्र से कहीं अधिक है। स्व समय एवं परसमय का भेद बताए जाने से यह सूत्रकृत है। इस आगम में एक सौ अस्सी क्रियावादी मतों का, चौरासी अक्रियावादी मतों का, सड़सठ अज्ञानवादी मतों का और बत्तीस विनयवादी मतों का–इस प्रकार सब मिलाकर तीन सौ त्रेसठ अन्य यूथिक मतों का स्वरूप निरूपण कर एवं उनका निराकरण कर स्वसिद्धान्त की पुष्टि की गई है। सर्वत्र सूत्रकृतांगसत्र में परमत का खण्डन और स्वमत का मण्डन दृष्टिगोचर होता है। 'वीर स्तुति' अध्ययन में भगवान महावीर स्वामी की उपमाओं से स्तुति की गयी है। इस आगम की तुलना बौद्ध परम्परा मान्य

ग्रन्थ अभिधम्मपिटक से की जा सकती है, जिसमें बुद्ध ने अपने युग में प्रचलित बासठ मतों का यथाप्रसंग खण्डन किया है।

इस आगम की भाषा प्राञ्जल होते हुए भी विषय के अनुरूप क्लिष्ट है परन्तु लालित्य ने इस क्लिष्टता में मिश्री का काम किया है।

3. स्थानांगसूत्र

द्वादशांगी में इसका तीसरा स्थान है। इसे जैन संस्कृति का विश्व कोष कहा जा सकता है। संख्या में क्रम से तत्त्वों के नामों का संकलन करने की सुन्दर शैली में लिखा यह एक अद्‌भुत ग्रन्थ है। यह सूत्र दस अध्ययनों में विभक्त है।

प्रस्तुत सूत्र का विषय निरूपण सर्वांगीण है। इसमें स्वसमय, परसमय, स्व-पर उभय समय, जीव, अजीव, जीवाजीव, लोक और अलोक की स्थापना की गई है। पदार्थ का द्रव्य, क्षेत्र, काल और पर्याय की दृष्टि से चिन्तन किया गया है। प्रथम स्थान में एक, दूसरे में दो यावत् अंतिम दसवें स्थान में दशविध वस्तुओं का वर्णन है। यथा–प्रथम स्थान में आत्मा, परमात्मा, बन्ध, मोक्ष आदि। द्वितीय स्थान में सिद्ध-संसारी आत्मा, सागार-अनगार धर्म आदि का वर्णन किया गया है ऐसे तृतीय में तीन-तीन, चतुर्थ में चार-चार, पंचम में पांच, छठे में छह, सातवें में सात, आठवें में आठ, नौंवे में नौ तथा दसवें स्थान में दस प्रकार का धर्म, दस प्रकार का सूत्र निरूपित किया गया है।

इस शास्त्र की भाषा प्रवाहमय है। बुद्धिजीवियों के लिए यह एक बहुत अच्छा चिन्तनीय ग्रंथ है।

4. समवायांगसूत्र

समवायांगसूत्र का द्वादशांगी में महत्त्वपर्ण स्थान है। वस्तु-विज्ञान, जैन सिद्धान्त और जैन इतिहास की दृष्टि से यह आगम महत्त्वपूर्ण है। इसमें जीव-अजीव आदि पदार्थों का परिच्छेद या समवतार है, अत: प्रस्तुत आगम का नाम समवाय है। समवायांगसूत्र में जीव, अजीव, लोक, अलोक एवं स्वसमय, परसमय का समावतार है। इसमें एक से लेकर सौ तक की संख्या का क्रमानुसार विकास हुआ है। सौ समवायों की संख्या के बाद क्रमश: 150-200-250-300-350-400 यावत् 1000, 1100 से 2000-20000 से 100000 से 1 लाखा 2 से 8 लाख और करोड़ की संख्या वाली विभिन्न वस्तुओं का उनकी संख्या के अनुसार पृथक्-पृथक् समवायों में

संकलनात्मक विवरण दिया है। इस सूत्र में द्वादशांगी गणिपिटक का परिचय भी विस्तृत रूप में उपलब्ध होता है। महामोह बन्ध के तीस कारण तेंतीस आसातना आदि का भी वर्णन किया गया है।

भाषा की दृष्टि से यह आगम महत्त्वपूर्ण है। कहीं-कहीं अलंकारों का प्रयोग भी मिलता है।

5. भगवतीसूत्र (व्याख्याप्रज्ञप्तिसूत्र)

जैन वाङ्मय में श्री व्याख्या प्रज्ञप्तिसूत्र की महत्ता स्वत: सिद्ध है। संवर की आराधना की दृष्टि से अंग साहित्य में जैसे आचारांग का स्थान सर्वोपरि है, वैसे ही दार्शनिक दृष्टि से व्याख्याप्रज्ञप्तिसूत्र की अपनी विशिष्टता है। इसकी दूसरी विशेषता है महामन्त्र नवकार का प्रथमत: उल्लेख। व्याख्याप्रज्ञप्तिसूत्र एक विशाल श्रुत ग्रन्थ है। ज्यों-ज्यों इसका स्वाध्याय, चिन्तन और परिशीलन किया जाए, त्यों-त्यों नए-नए अमूल्य रत्न मिलते हैं।

व्याख्याप्रज्ञप्तिसूत्र में इकतालीस शतक और छत्तीस हजार प्रश्नोत्तर हैं। इसमें अनन्त गम, अनन्त पर्याय, परिमितत्रस और अनन्त स्थावर जीवों का वर्णन किया गया है। इसमें भगवान् महावीर स्वामी और उनके जयेष्ठ शिष्य गणधर गौतम स्वामी का प्रश्नोत्तर शैली में संवाद मिलता है। जिसके अतिरिक्त-चलित आदि नौ प्रश्न, श्रावक शंत्र-पोखली का जिक्र, जयन्ती श्राविका, जो कि शय्यातर भी थी, उसने भगवान् महावीर स्वामी से अनेक विषयों पर विविध प्रश्न पूछे और भगवान् ने भी उनका समाधान/उत्तर देकर उन्हें सन्तुष्ट किया एवं भगवान् महावीर के निह्नव (प्रतिपक्षी) गौशालक का उल्लेख भी इस शास्त्र की विशेषता है।

व्याख्याप्रज्ञप्तिसूत्र में जो प्रश्नोत्तर की शैली अपनाई गई है, वह अत्यन्त प्राचीन है। भाषा शैली क्लिष्ट होते हुए भी प्राञ्जल है। जीवन प्रसंगों, घटनाओं और रूपकों के माध्यम से कठिन विषयों को यहाँ सरल करके प्रस्तुत किया गया है।

6. ज्ञाताधर्मकथांगसूत्र

द्वादशांगी वाणी का छठा अंग है ज्ञाताधर्मकथांग सूत्र। यह सूत्र आगमिक कथाओं का प्रतिनिधि ग्रन्थ है। इसमें कथाओं की विविधता एवं प्रौढ़ता है। इसलिए इसको 'न्याय धर्मकथा' भी कहा जा सकता है।

इस सूत्र ग्रंथ में ऐतिहासिक तथा कल्पित दोनों प्रकार की कथाएँ वर्णित हैं।

मेघकुमार का चरित्र ऐतिहासिक है और तुंबा आदि की काल्पनिक कथाएँ रूपक शैली में हैं। यहाँ मेघकुमार, धन्ना सार्थवाह, विजय चोर, धन्ना सार्थवाहों की चारों पुत्रवधुओं की परीक्षा, तीर्थंकर मल्ली भगवती का उल्लेख, तेतली पुत्र और पुण्डरीक-कुण्डरीक का वर्णन विस्तृत रूप में मिलता है। इस श्रुतांग की कथाएँ रोचक व शिक्षाप्रद हैं।

इस अंग सूत्र की भाषा प्रौढ़ एवं साहित्यिक है। अनेक स्थल ऐसे भी मिलते हैं, जहाँ बड़ी हृदयग्राही और अलंकारिक भाषा का प्रयोग किया गया है। उसे पढ़ते समय ऐसा आभास होता है कि हम किसी कमनीय काव्य का रसास्वादन कर रहे हैं।

7. उपासकदशांगसूत्र

उपासकदशांगसूत्र प्रथम अंग आचारांग का पूरक है। आचारांगसूत्र में जिस प्रकार मुनि धर्म का प्रतिपादन किया गया है, उसी प्रकार इस श्रुतांग में श्रावक धर्म का परिपूर्ण परिचय प्राप्त होता है।

उपासकदशांगसूत्र में श्रावकों के नियम एवं व्रत आदि का विस्तार से वर्णन किया गया है। साथ ही व्रतों के अतिचार भी स्पष्ट किए गए हैं। इसमें कथानकों के माध्यम से जैन गृहस्थ श्रावकों के धार्मिक नियम समझाए गए हैं। जो अपनी धर्म साधना में अत्यन्त संलग्न थे और नाना प्रकार की विघ्न बाधाएँ उपस्थित होने पर भी उससे च्युत नहीं हुए। वर्णित ये कथाएँ आज भी श्रावकों के लिए आदर्श बनी हुई हैं।

प्रस्तुत ग्रन्थ भाव, भाषा और विषय की दृष्टि से सुगम और रुचिकर हैं।

8. अन्तकृतदशांगसूत्र

अंग सूत्रों में अन्तकृतदशांगसूत्र का आठवां स्थान है। प्रस्तुत अंग में जन्म-मरण की परम्परा का अंत करने वाले विशिष्ट पवित्र चरित्रात्माओं का वर्णन है और इसके दस अध्ययन होने से प्रस्तुत सूत्र का नाम अन्तकृतदशांग है।

अन्तकृतदशांग सूत्र में गौतम आदि वृष्णिकुल के अठारह राजकुमारों की तपोमय साधना का उत्कृष्ट वर्णन है। इस सूत्र में महाराज कृष्ण के भाई गजसुकूमाल की सहनशीलता द्रष्टव्य है। प्रस्तुत सूत्र में वासुदेव कृष्ण को सर्वगुण सम्पन्न, श्रेष्ठ श्रद्धालु, विनयी, मातृभक्त और धर्म प्रभाविक दर्शाया गया है। श्रीकृष्ण को अपनी प्रजा और अन्त:पुर की शोभा स्वरूप रानियों को भी दीक्षा पर्याय स्वीकार करने के लिए प्रेरित किया गया दर्शाया गया है। सेठ सुदर्शन और अर्जुनमाली के प्रसंग द्वारा धर्म की आसुरी शक्ति पर विजय दिखाई गई है।

प्रस्तुत आगम की भाषा अर्द्धमागधी प्राकृत होते हुए भी शौरसेनी प्राकृत के प्रयोग कहीं-कहीं प्राप्त होते हैं। भाषा सरल एवं सरस है तथा शैली प्राञ्जल है।

9. अनुत्तरोपपातिकसूत्र

अनुत्तरोपपातिक सूत्र का श्रुतांगों में नवां स्थान है। तपश्चर्या का उत्कृष्ट स्वरूप प्रतिपादित करना इस शास्त्र की विशेषता है। महावीर कालीन सामाजिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों पर प्रकाश डालने के कारण भी यह अंग बहुत उपादेय है।

इस श्रुतांग में उन विशिष्ट पुरुषों का चरित्र अचार-विचार उल्लिखित है, जिन्होंने अपनी धर्म साधना एवं तपस्या के द्वारा अनुत्तर विमानों में जन्म लिया। अनुत्तर विमान वासी देव एक बार जन्म लेकर मोक्ष प्राप्त कर चले जाते हैं। अन्य से यही इन देवों की विशेषता है। इस सूत्र में उपवास और तपश्चर्या का प्रभाव और महत्त्व भी अंकित है। धन्ना अनगार की कठोर तपश्चर्या और उससे क्षीण हुए अंग प्रत्यंगों का मार्मिक एवं विस्तृत वर्णन यहाँ किया गया है, जिसकी उग्र तपस्या की प्रशंसा स्वयं भगवान् महावीर स्वामी ने की है।

अनुत्तरोपपातिकदशांगसूत्र में अर्द्धमागधी प्राकृत के साथ देशी शब्दों का बहुल प्रयोग दृष्टिगोचर होता है।

10. विपाकसूत्र

कर्म सिद्धान्त की दृष्टि से जैनागम साहित्य में विपाकसूत्र का महत्त्वपूर्ण स्थान है। अतएव यह आगम अत्यन्त उपयोगी है।

विपाकसूत्र के सुख विपाक और दु:ख विपाक के दो विभाग हैं। प्रथम विभाग में दुष्कृत करने वाले व्यक्तियों जैसे मृगा पुत्र, उज्झित कुमार, अभग्नसेन, शकट आदि की दु:खद स्थिति का मार्मिक वर्णन है। द्वितीय विभाग में सुकृत करने वाले व्यक्तियों जैसे सुबाहु कुमार आदि की यशोगाथा वर्णित है। जिस प्रकार कुकृत्य करने वाले यान्त्रिक और मानसिक पीड़ाएँ भोगकर नरक में जाते हैं, उसी प्रकार सुकृत्य करने वाले पुण्यफल से स्वर्ग एवं मोक्ष के अधिकारी बनते हैं। इस सूत्र की भाषा सरल और सुगम है।

11. प्रश्नव्याकरणसूत्र

प्रश्नोत्तर शैली में निबद्ध रचना का नाम प्रश्नव्याकरण है। इस दृष्टि से अंग ग्रंथों में इसकी महत्ता स्वत: प्रतिपादित हो जाती है।

प्रश्नव्याकरण के प्रथम श्रुतस्कन्ध में पांच आश्रव द्वारों और दूसरे श्रुतस्कन्ध में पांच संवर द्वारों का वर्णन है। इसमें अहिंसा-हिंसा, सत्य-असत्य आदि धर्म-अधर्म रूप विषयों की चर्चा है। आश्रव और संवर का निरूपण आगम ग्रन्थों में अनेक स्थानों पर मिलता है, पर प्रश्नव्याकरणसूत्र में जिस विस्तार से विश्लेषण है, वह अद्‌भुत और अनूठा है।

प्रश्नव्याकरण की शैली स्वयं में अनूठी है। प्राञ्जल है, गम्भीर विषयों को भी सरल ढंग से समझाया गया है। अतएव भाषा सरल एवं सरस है।

(ख) द्वादश-उपांगसूत्र

अंगों के बाद जैन साहित्य में उपांगों का विशिष्ट स्थान है। अंगों की रचना गणधरों ने की है और उपांगों की स्थविरों ने। उपांग संख्या में बारह हैं-

1. औपपातिकसूत्र

औपपातिकसूत्र जैन वाङ्मय का प्रथम उपांग है। अंगों में जो स्थान आचारांग का है, वही स्थान उपांगों में औपपातिकसूत्र का है। इसका सबसे बड़ा महत्त्व है कि नगरों आदि का जितना सुन्दर एवं विस्तृत वर्णन इस सूत्र में मिलता है, उतना अन्यत्र दुर्लभ है। तभी कहा जाता है-जहां उववाई .....

दो अध्ययनों में प्रथम का नाम समोसरण और द्वितीय का नाम उपपात है। 43 सूत्रों में जहाँ राजनैतिक, सामाजिक और नागरिक तथ्यों की चर्चा हुई है, वहाँ धार्मिक, दार्शनिक तथा सांस्कृतिक विषय भी प्रतिपादित किए गए हैं। भगवान् महावीर की शरीर सम्पदा को जानने के लिए यह एकमात्र आधारभूत आगम है। गौतम गणधर का शारीरिक और आध्यात्मिक परिचय यहाँ दिया गया है। प्रस्तुत सूत्र में अंबड संन्यासी (परिव्राजक) की व्रत निष्ठा द्रष्टव्य एवं सराहनीय है।

धार्मिक एवं नैतिक मूल्यों की स्थापना औपपातिक सूत्र में की गई है। इसकी भाषा उपमा बहुल, समास बहुल और विशेषण बहुल है। चम्पा नगरी का अलंकारिक वर्णन सर्वप्रथम इसी सूत्र में मिलता है।

2. राजप्रश्नीयसूत्र

राजप्रश्नीयसूत्र सूत्रकृतांगसूत्र पर आधारित द्वितीय उपांग ग्रंथ है। इसमें राजा प्रदेशी (प्रसेनजित) द्वारा केशी स्वामी को पूछे गए धर्म एवं सिद्धान्त विषयक प्रश्नों

का समाधान किया गया है। इसके अलावा यहाँ स्थापत्य, संगीत और नाट्यकला की दृष्टि से अनेक तत्त्वों का समावेश हुआ है। इसके दो भागों में 217 सूत्र हैं।

राजप्रश्नीयसूत्र की यह एक महत्त्वपूर्ण विशेषता है कि इसमें भगवान् पार्श्वनाथ की परम्परा के सन्त केशी स्वामी के साथ श्वेताम्बिका नगरी के नास्तिक राजा प्रदेशी का हुआ संवाद निबद्ध किया गया है। संवाद का विषय है–आत्मा अथवा जीव का अस्तित्व और नास्तित्व। कलाएँ 72 होती है, उनका यहाँ वर्णन किया गया है। साम, दाम और दण्ड नीति के अनेक सिद्धान्तों का प्रतिपादन करते हुए इसी सूत्र में त्रिविधि आचार्यों का निरूपण तथा परिषद् (सभाएँ) चार प्रकार की होती हैं, इन सब विषयों पर प्रकाश डाला गया है।

सरल भाषा और दार्शनिक तत्त्व विश्लेषण शैली ग्रन्थ की अनूठी विशेषता है।

3. जीवाभिगमसूत्र

जीवाभिगम का आधारभूत सूत्र स्थानांग है। जैन तत्त्व ज्ञान विश्लेषण की दृष्टि से जीवाभिगमसूत्र की उपांग सूत्रों में अपनी महत्ता है।

इसके दो विभागों में से पहले में अजीव और संसारी जीवों के भेदों का और दूसरे विभाग में सिद्ध और संसारी जीवों का वर्णन और भेद निरूपण किया गया है। जीवाभिगमसूत्र में भगवान् महावीर स्वामी और गणधर गौतम के प्रश्नोत्तर के रूप में जीव-अजीव के भेद-प्रदेश बतलाए गए हैं।

यह गद्यात्मक शैली का ग्रन्थ है। इसकी भाषा सरल और सुगम है।

4. प्रज्ञापनासूत्र

ज्ञानविज्ञान का कोष प्रज्ञापना सूत्र जैन आगम साहित्य का चतुर्थ उपांग ग्रंथ है। इसके रचयिता श्री श्यामाचार्य हैं। अंगों में जो स्थान भगवती सूत्र का है, वही स्थान उपांगों में प्रज्ञापनासूत्र का है। इसमें 36 प्रकरण एवं 346 सूत्र हैं। विषय की दृष्टि से इस सूत्र में जीवों के भेद, गति, इन्द्रिय, काय, वेद, कषाय आदि का वर्णन मिलता है। संसारी जीव, योनि, जीवों का शरीर, कषाय, इन्द्रिय तथा लेश्या के स्वरूप का व्याख्यान करना इसी प्रज्ञापनासूत्र का विषय है।

यह शास्त्र साहित्य, धर्म, दर्शन, इतिहास और भूगोल की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है। साथ ही यहाँ अलंकारिक प्रयोग कम होने पर भी जैन पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग विशेष रूप से मिलता है।

5. जम्बूद्वीप प्रज्ञप्तिसूत्र

श्री व्याख्याप्रज्ञप्ति सूत्र का उपांग जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति है। इसमें भौगोलिक दृष्टि से सृष्टि का वर्णन किया गया है। तीर्थंकर जन्मोत्सव का जैसा निरूपण इस शास्त्र में किया गया है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है।

इसमें भरत क्षेत्र, काल चक्र, तथा ज्योतिषी देवों का वर्णन करते हुए जम्बूद्वीप में दो चन्द्र, दो सूर्य, 56 नक्षत्र, 176 महाग्रहों का प्रकाशन किया गया है, साथ ही भरत चक्रवर्ती, चुल्ल हिमवंत पर्वत, जम्बूद्वीपगत विषयों का संग्रह है।

यद्यपि इसकी भाषा कुछ क्लिष्ट है, फिर भी जनसाधारण द्वारा सुगमता से समझा जा सकता है।

6. सूर्यप्रज्ञप्तिसूत्र एवं 7. चन्द्रप्रज्ञप्तिसूत्र

ज्योतिष विद्या की दृष्टि से इन दोनों सूत्रों की अपनी महत्ता है।

सूर्यप्रज्ञप्तिसूत्र में सूर्य के विमान, दक्षिणायण, उत्तरायण, पर्वबाहु, विमान और सूर्य संवत्सर आदि का, सूर्य एवं नक्षत्रों की गति का सविस्तार वर्णन किया गया है। इसमें सूर्य के उदय-अस्त पर भी चिन्तन किया गया है। चन्द्रप्रज्ञप्तिसूत्र चन्द्र आदि ज्योतिष चक्र का वर्णन करता है। इसमें चन्द्र के परिभ्रमण का उल्लेख है। इसके अलावा यहाँ चन्द्रमा के विमान, मांडले, गति, नक्षत्र, योग, ग्रहण तथा राहु एवं चन्द्र के पांच संवत्सरों का वर्णन मिलता है। चन्द्रमा को स्वत: प्रकाशमान भी यहाँ बतलाया गया है।

भाषा की दृष्टि से यह कुछ दुरुह अवश्य है, फिर भी बोधगम्य है।

8-12. निरयावलिका सूत्र (कप्पिया, कप्पवडंसिया, पुप्फिया पुप्फचूलिका, वण्हिदशा)

जैन वाङ्मय में नरकों एवं उसमें रहने वाले नारकीय जीवों के बारे में ज्ञान करवाने वाला ग्रन्थ विशेष है–निरयावलिकासूत्र।

यह सूत्र तीन तीर्थंकरों के शासनकाल के साधु-साध्वियों, राजा-रानियों के ऐतिहासिक वर्णन के कारण जैन संस्कृति और सभ्यता की अक्षुण्य धरोहर है। निरयावलिका श्रुतस्कन्ध में पांच उपांग समाविष्ट हैं। वे हैं–

(क) **कप्पिया** (कल्पिका)–इसी का दूसरा नाम निरयावलिका है इस उपांग में 10 अध्ययन है। इसमें कुणिक अजातशत्रु का जन्म, पिता श्रेणिक के साथ

मनमुटाव, पिता को कारागृह में बंदकर कुणिक का राज्य सिंहासन पर बैठना, श्रेणिक का आत्महत्या कर लेना तथा कुणिक का वैशाली के गणराजा चेटक के साथ युद्ध करने का वर्णन है। इसके अतिरिक्त इस सूत्र में सम्राट श्रेणिक के दस पुत्रों का वर्णन है, जो नरक गामी बने एवं वहाँ से निकलकर वे महाविदेह में जन्म लेकर शिवपद प्राप्त करेंगे।

(ख) **कप्पवडंसिया**–इसमें श्रेणिक के दस पौत्रों की कथाएँ हैं, जिन्होंने अपने सत्कर्मों द्वारा स्वर्ग प्राप्त किया था, इसी के आधार पर इसके दस अध्ययन हैं। इस प्रकार इस वर्ग में व्रताचरण के द्वारा जीवन-शोधन की प्रक्रिया पर प्रकाश डाला गया है। पिता जहाँ कषाय के वशीभूत होकर मरण करके नरक में जाते हैं, वहाँ पुत्र सत्कर्मों के द्वारा स्वर्ग प्राप्त करते हैं। यही कप्पवडंसिका की कथावस्तु है।

(ग) **पुप्फिका**–इसमें भी दस अध्ययन हैं। जिसमें ज्योतिषी देव चन्द्र, सूर्य और शुक्र का भगवान् महावीर के समोसरण में आने का उल्लेख है। चतुर्थ अध्ययन में एक बहुत ही सरस और मनोरंजक कथा है। सुभद्रा की कथा के माध्यम से साध्वी बनकर भी बच्चों पर आसक्ति करने वाले का हश्र बताया गया है।

(घ) **पुप्फचूला**–इस उपांग में भी ऐसे व्यक्तियों की कथाएँ हैं, जिन्होंने धार्मिक अध्ययन द्वारा स्वर्गलाभ एवं दिव्य सम्पदाएँ प्राप्त की हैं। इसमें दस अध्ययन हैं, जिनके नाम श्री, ह्री, धृति आदि हैं। इसमें स्वर्ग के देव अपने अतुल वैभव के साथ भगवान् महावीर को वन्दन करने आते दिखलाई देते हैं।

(ङ) **वण्हिदसा**–प्रस्तुत उपांग का नाम पहले अंधकवृष्णिदशा था। बाद में अंधक शब्द लुप्त हो गया। आजकल यह उपांग वृष्णिदशा (वण्हिदशा) नाम से विश्रुत है। इसमें द्वारिका के राजा कृष्ण वासुदेव के वर्णन के साथ वृष्णिवंशीय बारह राजकुमारों के दीक्षित होने का वर्णन है। भगवान् अरिष्टनेमि एक बार द्वारिका में पधारे और रैवतक पर्वत पर विराजे। वहाँ उनके दर्शनार्थ अनेक वृष्णिवंशीय कुमार पहुँचे और अनगार होकर कालान्तर में निर्वाण पद को प्राप्त हुए। यही वण्हिदशा का वर्ण्य विषय है।

(ग) चतुर्विधमूलसूत्र

1. दशवैकालिकसूत्र

गद्यात्मक-पद्यात्मक शैली में लिखा गया आर्वाचीन ग्रन्थ दशवैकालिक है।

फिर भी मूल सूत्रों में इसका प्रथम स्थान है। कारण यह है आचरण धर्म पर प्रकाश डालता है। साधुजीवन में आहार-विहार सम्बन्धी कतिपय छोटे-छोटे एवं सूक्ष्म नियमों के पालन करने की यहाँ प्रेरणा दी गयी है। विकाल में अकरणीय धर्मों पर प्रकाश डालना इसका मूल प्रतिपाद्य है। अतः यह मूलसूत्र माना गया है। आचार्य शय्यंभव द्वारा अपेन पुत्र मणक के अल्प आयुष्य को जानकर इस सूत्र की रचना की गई थी, जो कि आज अल्पबुद्धि साधकों के लिए उपयोगी है। समस्त श्रुतज्ञान के विलोडन के पश्चात् इस अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सूत्र का चित्रण किया गया है।

इस सूत्र में दस अध्ययन है। साधक के आचार के विश्लेषण के साथ ही जीव विद्या जैसे महत्त्वपूर्ण विषयों पर इस सूत्र में चर्चा की गई है। धर्म क्या है? सूत्र में प्रारम्भ में ही सारगर्भित इसका उत्तर पाया जाता है कि–

धम्मो मंगलमुक्किट्ठं अहिंसा संजमो तवो।
देवा वि तं नमंसंति, जस्स धम्मे सया मणो।।

साधु की भिक्षाचारी, संयम दृढ़ता, अनाचार त्याग, सत्य एवं विनय के स्वरूप का विस्तृत विवेचन इस सूत्र की उपलब्धि है।

इसकी भाषा सरस, सरल और सुबोध है।

2. उत्तराध्ययनसूत्र

उत्तराध्ययनसूत्र मूलसूत्र है। यह जैनों की गीता है। साधुओं के लिए यह नैतिक शास्त्र है, कारण यह कि इसका अध्ययन किए बिना शिष्य की योग्यता सिद्ध नहीं होती। 36 अध्ययनों में विभक्त यह उपयोगी ग्रंथ जैन संस्कृति के प्राचीन गौरवमयी स्वरूप को स्वयं में प्रदीप स्तम्भ की तरह संजोए हुए हैं। एक से बढ़कर एक शिक्षाप्रद कथा-आख्यान यहाँ मिलते हैं, जो कर्म, ज्ञान एवं योग को परिभाषित करते हैं।

इसमें भगवान् महावीर स्वामी की अन्तिम समय में उपदिष्ट वाणी का सचित्रण सम्यक् प्रकार से किया गया है। विनय धर्म, साधु के परिषह, संसार की नश्वरता, जीव-अजीव, कर्मवाद, षट् द्रव्य, नव तत्त्व, पार्श्वनाथ-महावीर स्वामी की परम्परा प्रभृति विषयों का प्रतिपादन किया गया है। केशी-गौतम अध्ययन में भगवान महावीर का जिस श्रद्धा और भक्ति के साथ गौरवपूर्ण उल्लेख किया गया है, वह बहुत ही महत्त्वपूर्ण है।

इसी कारण से इस पर अनेक आचार्यों ने संस्कृत एवं क्षेत्रीय भाषाओं में टीका ग्रंथों की भी रचना की है। भाषा और विषय की दृष्टि से यह प्राचीन है। अत: मूलसूत्रों में इसे स्थान/समाविष् किया गया है। इस आगम में सुभाषित एवं संवाद का प्रयोग भी यत्र-तत्र उपलब्ध होता है।

3. नन्दीसूत्र

नन्दीसूत्र का आगम साहित्य में बहुत महत्त्व रहा है क्योंकि इसमें भाव मंगल रूप पांचों ज्ञानों का वर्णन है। सूत्र, आगम अथवा श्रुत भी पांच ज्ञानों में से एक है, इसलिए नन्दीसूत्र का सम्बन्ध दूसरे आगम ग्रन्थों या सूत्रों से स्वत: जुड़ जाता है। यह सूत्र देवद्धिगणी क्षमाश्रमण द्वारा रचित है।

इसमें मंगल स्वरूप सर्वप्रथम भगवान् महावीर स्वामी की स्तुति की गई है। इसके बाद संघ को नगर, समुद्र, चक्र, रथ, कमल, सूर्य, चन्द्रमा और मेरु आदि उपमाओं से उपमित करके उसे गौरव प्रदान किया है। उसके बाद चौबीस तीर्थंकरों की स्तुति की गयी है। यही स्तुति लोगस्स के पाठ में है। भगवान् महावीर के गणधर, युग प्रधान स्थविरों के विशेषणयुक्त नाम-इस सूत्र की अपनी महत्ता है। ज्ञान का सम्पूर्ण वर्णन इस सूत्र में किया गया है।

रचनाक्रम में नन्दीसूत्र का स्थान अन्तिम है, अत: इसकी भाषा अर्वाचीन है।

4. अनुयोगद्वारसूत्र

अनुयोगद्वारसूत्र विवेचनात्मक ग्रन्थ है। इसके रचयिता आचार्य आर्य रक्षित हैं। दार्शनिक दृष्टि से इस सूत्र का अध्ययन किया गया है। यह जैन पारिभाषिक शब्दों का कोष है। उपक्रम-निक्षेप शैली की प्रधानता और साथ ही भेद-प्रभेदों की प्रचुरता होने से यह सूत्र अत्यन्त क्लिष्ट है, फिर भी जैनदर्शन के रहस्य को समझने के लिए यह अतीव उपयोगी कुंजी है।

इस सूत्र में प्रश्नोत्तर शैली में पल्योपम, सागरोपम, संख्यात, असंख्यात, अनन्त के प्रकार और निक्षेप, अनुगम एवं नय का निरूपण किया गया है।

(घ) चतुर्विध छेदसूत्र

संयम मार्ग पर चलते हुए साधकों द्वारा महाव्रतों का दृढ़तापूर्वक पालन करते हुए भी कहीं न कहीं, कोई न कोई दोष अवश्य लग जाता है, उस दोष को दूर करने के लिए प्रायश्चित् का विधान जिस शास्त्र में वर्णित है, उसे छेद सूत्र कहते हैं। छेद सूत्र चार हैं जिसमें व्यवहार सूत्र प्रथम है।

1. व्यवहारसूत्र

व्यवहारसूत्र आचार्य भद्रबाहु की रचना है, यहाँ स्वाध्याय करने पर विशेष बल दिया गया है। साथ ही अयोग्य काल में स्वाध्याय करने का निषेध किया गया है। श्रमण-श्रमणियों के बीच अध्ययन की सीमाएँ निर्धारित की गई है। आचार्य-उपाध्याय के लिए विहार के नियम प्रतिपादित किए गए हैं। आलोचन और प्रायश्चित् की विधियों का यहाँ विस्तृत विवेचना मिलती है।

व्यवहारसूत्र की भाषा अर्द्धमागधी प्राकृत है फिर भी इस पर अन्य प्राकृतों जैसे-शौरसेनी, महाराष्ट्री आदि का भी प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

2. दशाश्रुतस्कन्धसूत्र

इस छेदसूत्र के कर्त्ता भद्रबाहु है। दशाश्रुतस्कन्धसूत्र का छेदसूत्रों में बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसमें 10 श्रुतस्कन्ध है, जिसमें 20 असमाधिदोषों का, शबल दोषों का, आशातनाओं का, 8 प्रकार की गणि सम्पदाओं का, चित्तसमाधि का, ग्यारह प्रकार की उपासक प्रतिमाओं एवं बारह प्रकार की श्रमण प्रतिमाओं का वर्णन मिलता है।

3. वृहत्कल्पसूत्र

वृहत्कल्प छेदसूत्र की महत्ता इसलिए है कि इस आगम में श्रमण-श्रमणियों के जीवन और व्यवहार से सम्बन्धित अनेक महत्त्वपूर्ण तथ्यों को प्रकाशित किया गया हे।

इस छेदसूत्र में श्री श्रमणों के आचार विषयक विधि-निषेध, उत्सर्ग-अपवाद, तप, प्रायश्चित् आदि पर चिन्तन किया गया है। श्रमण को प्रत्येक कार्य आज्ञा लेकर, यहाँ तक कि शौचादि के लिए बाहर जाए, तो भी आज्ञा लेकर जाना चाहिए-ऐसा इस आगम में निरूपित किया गया है।

4. निशीथसूत्र

निशीथ रात्रि एवं अन्धकार का दूसरा नाम है। अनाचरण के कारण जब साधुजीवन में अन्धकार छा जाता है तब यहाँ उल्लिखित प्रायश्चित् विधि व्यक्ति को पुन: साधुचर्या में प्रवेश कराती है। यही निशीथ का प्रतिपाद्य विषय है।

इस दृष्टि से छेदसूत्रों में निशीथ का प्रमुख स्थान है। इसका महत्त्व इस बात में

भी है कि जो तीन वर्ष का दीक्षित हो और गाम्भीर्य आदि गुणों से युक्त हो, प्रौढ़ता की दृष्टि से जो 16 वर्ष की आयु का साधु हो, वही निशीथसूत्र का वाचक हो सकता है।

इसमें साधु-साध्वियों के आचार गोचर सम्बन्धी नियमों का निरूपण और इन नियमों के उत्सर्ग और अपवाद मार्ग भी वर्णित है। किसी भी प्रकार के नियम का भंग होने पर समुचित प्रायश्चित् का विधान है। संयमी व्यक्तियों के लिए निषेधात्मक कार्यों का कथन है। आगमिक सिद्धान्त शील, संयम, तप और भावना का सुन्दर वर्णन किया गया है।

(ङ) आवश्यकसूत्र

जैन आगम साहित्य में आवश्यकसूत्र का अपना विशिष्ट स्थान है। यह सूत्र जीवनशुद्धि और दोषपरिमार्जन के लिए है। साधक चाहे साक्षर हो, अथवा निरक्षर ही क्यों न हो, सभी साधकों के लिए आवश्यक का ज्ञान परमावश्यक है। आवश्यक सूत्र के परिज्ञान से साधक अपनी आत्मा को निखरता है और परखता भी है।

जैनागमों में उपासकदशांग सूत्र की विशेषताओं का यहाँ अध्ययन किया जा रहा है जो प्रबन्धगत अभीष्ट को द्योषित करता है। उसके बाद आगमों में समागत उपासकों के समानान्तर पद (शब्द) और फिर उपासकदशांग सूत्र में आगम विषयवस्तु का प्रकाश किया जा रहा है।

(ख) जैनामगों में उपासकदशाङ्गसूत्र

उपासकदशांगसूत्र का अंग सूत्रों में विशिष्ट स्थान है। यही एकमात्र ऐसा सूत्र है, जिसमें सम्पूर्णतया श्रावक जीवन की चर्चा मिलती है। श्रमण भगवान् महावीर स्वामी ने न केवल श्रमणों को, अपितु गृहस्थ वर्ग को भी कर्म क्षय के लिए प्रेरित किया है। एक सद्गृहस्थ सदाचरण द्वारा अपने जीवन को समुन्नत कर सकता है। और कर्म-क्षय करके मोक्ष पा सकता है। इसी का सम्यक् समाधान प्रस्तुत सूत्र उपासकदशांग में हमें मिलता है। इसके अतिरिक्त उपासकदशांगसूत्र की अन्य अनेक विशेषताएँ हैं, जिनका उल्लेख करना। यहाँ नितान्त आवश्यक है।

1. उपासकदशांग की विशेषताएँ

(1) सम्पन्नता : लौकिक और आध्यात्मिक

उपासकदशांग सूत्र के दश अध्ययनों में श्रावकों की आध्यात्मिक उन्नति का

प्रतिपादन किया गया है। साथ ही श्रावकों के आर्थिक वैभव का भी दिग्दर्शन कराया गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि उस समय भारत की आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी थी। धन की मूल्यवता अक्सर स्वर्णमुद्राओं में आंकी जाती थी। दशों श्रावकों के पास अपार सम्पत्ति, विशाल भूमि एवं पशुधन था। वे अपनी सम्पत्ति का तृतीय भाग सुरक्षित निधि के रूप में रखते थे। इसलिए उनके जीवन में एक निश्चिन्तता थी।

यही दशों श्रावक जब भगवान् महावीर स्वामी का प्रथम उपदेश मात्र सुनते हैं, तो महिमामय उपदेश एवं आत्मप्रेरणा से अनुप्राणित होकर त्यागमय जीवन स्वीकार कर लेते हैं। जैसे उन्हें पहले सम्पत्ति भोग में आनन्द आता था, वैसे ही उन्हें अब त्याग में आनन्द आने लगा है। जहाँ एक तरफ आनन्द एवं अन्य श्रमणोपासकों को अपार समृद्धि एवं सुख-सुविधा सम्पन्न रूप में देखते हैं, वहीं दूसरी तरफ वे त्याग के पथ पर बढ़ते हुए दिखलायी देते हैं, यहाँ वे सभी इतने तन्मय हैं कि उनसे भोग स्वयं छूट जाते हैं, वे परम परितुष्ट और अत्यन्त प्रसन्न दृष्टिगोचर होते हैं।

(2) जैनधर्म : सत्य का पक्षधर

उपासकदशांगसूत्र में गौतम स्वामी एवं आनन्द श्रावक प्रकरण में सत्य का पक्ष लिया गया है। आनन्द के जीवन की यह घटना बहुत महत्त्वपूर्ण है। भगवान् महावीर के प्रथम गणधर गौतम स्वामी को आनन्द श्रावक को हुए अवधि ज्ञान की सीमा के विषय में शंका उत्पन्न हो जाती है और विवादास्पद प्रसंग बन जाता है परन्तु भगवान् महावीर स्वामी आनन्द श्रावक की बात को सत्य कहते हैं। तभी तो गौतम जैसे प्रधान गणधर एवं लब्धि निधान को भी असत्यभाषित करने पर आनन्द श्रावक से क्षमायाचना करनी पड़ती है। सर्वव्रती गौतम स्वामी का देशव्रती आनन्द श्रावक से क्षमायचना करना श्रमण धर्म में निहित सत्यनिष्ठा का प्रतीक है।

(3) विषय वस्तु का साहित्यिक निरूपण

उपासकदशांगसूत्र में विषयवस्तु में सुन्दरता एवं सजीवता लाने के लिए साहित्यिक शैली अपनाई गई है। दूसरे अध्ययन में श्रावक कामदेव की धर्म निष्ठा को डिगाने के लिए उपसर्ग ढ़ाने के लिए आया देव पिशाच, हाथी और सर्प का रूप बनाता है। पिशाच के वर्णन में सूत्रकार ने उपमा अलंकार का सुन्दर वर्णन किया है जैसे कि पिशाच का सिर गाय को चारा डालने वाले कुण्ड के समान था। केश धान्य आदि की मंजरी के तन्तुओं के समान रूखे मोटे थे। भौंहे गिलहरी की पूँछ के समान